अध्याय–10

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र छिंदवाड़ा

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा 30 मार्च, 1995 को अस्तित्व में आया और 3 जनवरी, 1996 से इसे भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के अधीन उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के सैटेलाइट केन्द्र के रूप में घोषित किया गया। इस केन्द्र को जैवविविधता संरक्षण, अकाष्ठ वन उपज, वन रक्षण, सामाजिक–आर्थिक, वन संवर्धन और वृक्ष सुधार जैसे विशेषीकृत क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान करने का अधिदेश मिला है। इसके अलावा, इस केन्द्र को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने वानिकी सेक्टर में मानव संसाधन का विकास करने का कार्य भी सौंपा गया है ताकि स्व–रोजगार द्वारा निर्धनता में कमी लाई जा सके।

वर्ष 2003–2004 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

कोई नहीं

वर्ष 2003–2004 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1: प्राकृतिक वनों एवं रोपणों में बीच की फसल के रूप में औषधीय एवं सुरभित पादपों की खेती की व्यवहार्यता पर अध्ययन और इनकी पादप रासायनिक जांच [049/सी.एफ.आर.एच.आर.डी.–(2001–2002)/(2)]

प्रधान अन्वेषक–श्री ए. विजयराघवन

स्थिति : अनेकों संकटापन्न/संकटस्थ प्रजातियों सहित लगभग 90 औषधीय और सुरभित पादप प्रजातियों को मिलाकर, इनके संरक्षण के उद्देश्य के लिए, एक शाकीय उद्यान बनाया गया। सतावर के मामले में जड़ और गनवारपथा में पत्तियों के उत्पादन पर अन्तरालन के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए चार विभिन्न अन्तराल पर सतावर (एस्पेरेगस रेसीमोसस), सर्पगंधा (रावोल्फिया सर्पेन्टाइना), कालिहारी (ग्लोरिओसा सुपर्बा) और गनवारपथा (एलोए वीरा) का रोपण किया गया।

सफेद मूसली रोपण पदार्थ (कंद) को पांच उपचारों, यथा– गौ मूत्र, नीम पत्ती सार, केलोट्रोपिस पत्ती सार, बेविस्टिन 0.2 प्रतिशत और नियंत्रण। कंदों को एक घंटे के लिए उपर्युक्त घोलों में भिगोया गया और तब तैयार अंकुरण क्यारियों में बोया गया। परिणामों ने दर्शाया कि अन्य सभी उपचारों की तुलना में केलोट्रोपिस पत्ती सार के साथ उपचारित रोपण पदार्थ ज्यादा अंकुरण प्रतिशत देता है। ऐसा पादपों में विद्यमान रेजिन और β–एमीरिन, टाराक्सेस्टीरॉल, β–सिटोस्टीरॉल, फ्री सेपोजीनिन्स जैसे पादप रसायनों की कवकी रोधी, जीवाण्विक रोधी क्रियाशीलता के कारण है।

मेलाइना आर्बोरिया, पावलोनिया प्रजाति, ऐजैडिरैक्टा इंडिका और एम्ब्लिका आफिसिनेलिस के रोपणों में और प्राकृतिक वन में बीच की फसल के रूप में कालमेघ, लेमन घास और गनवारपथा का रोपण किया गया, ताकि इन अवस्थाओं के तहत इनके प्रदर्शन की तुलना की जा सके।

परियोजना 2: कृषि वानिकी और रोपण पारितंत्रों में एम्ब्लिका आफिसिनेलिस और मेलाइना आर्बोरीया के नाशिकीटों पर अध्ययन [050/सी.एफ.आर.एच.आर.डी. –(2001–2002)/2(3)]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. पी.बी. मेशराम

स्थिति : गाल संरूपण कीट बी. स्टाइलोफोरा के विरूद्ध ई. आफिसिनेलिस की सात किस्मों का मूल्यांकन किया गया। अन्य किस्मों (एन 6, एन 7, फ्रान्सिस, बनारसी और वाइल्ड) की अपेक्षा चकय्या इसके बाद कन्चन को नाशीजीव आक्रमण के प्रति कम संवेदनशील पाया गया।

गाल बनाने वाले कीट बीटूसा स्टाइलोफोरा द्वारा क्षतिग्रस्त एम्ब्लिका ओफिसिनेलिस

परियोजना 3: बुकानेनिया लेंजन स्परेंग. (एचार अथवा चिरोंजी) की पौधशाला तकनीकों और प्रवर्धन विधियों का मानकीकरण [051/सी.एफ.आर.एच.आर.डी.–(2001–2002)/3(4)]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. डी.एल. नन्देश्वर

स्थिति : अंकुरण और पौध वृद्धि के संबंध में छोटे और बड़े आकार के बीजों की अपेक्षा बुकानेनिया लेंजन के मध्यम आकार के बीज बेहतर पाए गए। पौधशाला में बी. लेन्जन पौधों के अंकुरकों की पौधा रोपण अवस्थाओं को मानकीकृत किया गया।

बुकानेनिया लेंजन का ब्लॉक रोपण

वर्ष 2003–2004 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1: गेन्डोर्माटेसीया की लाकेटी स्टपिटाटी प्रजाति की खेती तकनीक का मानकीकरण और उपयोग [056/सी.एफ.आर.एच.आर.डी.–2003/2(6)]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. सी.के. तिवारी

स्थिति : नसल के चयन के लिए जी. लूसिडियम का आकारिकीय एवं शारीरिकीय अध्ययन किया गया। कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 2: पौधशाला और रोपण अवस्था में ऐल्बिजिया प्रोसेरा की पोषणिक आवश्यकता पर अध्ययन [057/सी.एफ.आर.एच.आर.डी.–2003/3(7)]

प्रधान अन्वेषक–श्री एस.डी. सोनकर

स्थिति : मई, 2003 के महिने में तीन विभिन्न स्थानों यथा– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान परिसर, जबलपुर, बामनदेही, सीवनी और छिंदवाड़ा से ए. प्रोसेरा के बीज एकत्र किए गए। फलियों को सावधनीपूर्वक तोड़ा गया और बीजों को एकत्रित और सुखाकर आगे अनुसंधान के लिए वायुरूद्ध पार्त्रो में भण्डारित किया। अंकुरण प्रतिशतता के लिए बीजों का परीक्षण किया। 80 प्रतिशत अंकुरण के साथ जबलपुर के बीज सर्वोत्तम पाए गए, इसके बाद सीवनी के 72 प्रतिशत और छिंदवाड़ा के 68 प्रतिशत रहे।

वर्ष 2003–2004 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1: मध्य प्रदेश की उष्णकटिबंधीय जलवायु के तहत कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पादपों की उत्पादन प्रौद्योगिकी का मानकीकरण [055/सी.एफ.आर.एच.आर.डी.–2003/(5)]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. ए.के. पाण्डे

स्थिति : अन्तराल एन.ए.डी.ए.एफ. और एफ.वाई.एम. के प्रभाव के लिए सर्पगंधा (रावोल्फिया सर्पेन्टाइना), कालमेघ (एन्ड्रोग्रेफिस पेनिकूलाटा), कालिहारी (ग्लोरिओसा सुपर्बा), गुडवेल (टिनोस्पोरा

कार्डिफोलिया), गुडमार (जीम्नीमा सील्वीस्ट्री) और ऑवला (एम्ब्लिका आफिसिनेलिस) के परीक्षण हेतु प्रयोग तैयार किए गए। प्रेक्षण शुरू किए गए।

औषधीय एवं सुरभित पादप उद्यान

शिक्षा और प्रशिक्षण

आयोजित प्रशिक्षण

- किसानों और गैर सरकारी संगठनों, गाजीपुर, उ.प्र. के किसानो; कोंधाली, एम.एस. (आई डब्ल्यू डी.पी. के तहत) के किसानों; बडगांव माहुरी, अमरावती, महाराष्ट्र के किसानों के लिए 29 और 30 सितम्बर, 2003; 4 से 6 जनवरी 2004; 28 से 30 जनवरी, 2004; और 25 मार्च के वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा में औषधीय और सुरभित पादपों की खेती और संरक्षण पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में क्रमशः 40, 20, 21 और 45 सहभागियों ने भाग लिया।

औषधीय एवं सुरभित पादपों की खेती एवं सरंक्षण पर प्रशिक्षण

- वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र सी.डब्ल्यू.ए. में 1 और 2 मार्च, 2004 को छिंदवाड़ा में कारपेन्टरों/पादप उत्पादकों के लिए काष्ट पहचान और परिरक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में 19 सहभागियों ने भाग लिया।

शोधपत्र

1. पाण्डे, ए.के. (2003): कम्पोजिसन एंड इन–विट्रो एन्टिफंगल एक्टिविटी ऑफ दी इसैन्सियल ऑयल ऑफ मिन्थौल मिन्ट (मेन्था आर्वेन्सिस एल.) ग्रोइंग इन सेन्ट्रल इंडिया। इंडियन ड्रग्स, 40(2): 126–128।

2. मेशराम, पी.बी. और पात्रा, ए.के. (2003): हैवी आउटब्रेक ऑफ पाराकीट सिटाकूला क्रेमीरी इन हाई टैक प्लान्टेशन ऐट छिंदवाड़ा। इंडियन फॉरेस्टर, 129(3): 413–414।

3. मेशराम, पी.बी. (2003): इवेलूएशन ऑफ सम इन्सेक्टिसाइड अगेंस्ट लेस बग टिंजिस बीसोनी इन हाई टैक प्लान्टेशन्स ऑफ मेलाइना आर्बोरीया। माई फॉरेस्ट, 39(2): 133–135।

4. मेशराम, पी.बी.; पात्रा, ए.के. और गर्ग, वी.के. (2003): सीजनल हिस्ट्री एंड कैमिकल कंट्रोल ऑफ गाल फार्मिंग इन्सैक्ट बीटूसा स्टाइलोफोरा ऑन एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस। इंडियन फॉरेस्टर, 129 (10): 1249–1256।

5. सोनकर, एस.डी.; पात्रा, ए.के. और पाण्डे, ए.के. (2003): ग्रोथ परफार्मेन्स एंड सूटेबिलिटी ऑफ नाइट्रोजन एंड नॉन–नाइट्रोजन फिक्सिंग ट्री स्पीसिज़ ऑन डीग्रेडेड साइट्स। इंडियन जॉरनल ऑफ फॉरेस्ट्री, 26(3): 271–275।

6. सोनकर, एस.डी. (2004): ग्रोथ परफॉमेन्स ऑफ डिफरेन्ट नाइट्रोजन फिक्सिंग ट्री स्पीसिज़ एण्ड दीयर सबसीक्वेन्ट आर्गेनिक मैटर एंड नाइट्रोजन इनरिचमेन्ट इन डिफरेन्ट टाइप ऑफ डीग्रेडेड साइट्स। एन्वायरमेन्ट एंड इकॉलाजी, 22 (स्पेश.–1): 104–110।

7. सोनकर, एस.डी. (2004): लिटर प्रोडक्शन एंड न्यूट्रिएन्ट रीटर्न इन दी प्लान्टेशन ऑफ टेक्टोना ग्रैन्डिस एंड एडजवाइनिंग नेचुरल फॉरेस्ट इन मध्य प्रदेश। एन्वायरमेन्ट एंड इकोलॉजी, 22 (स्पेश.– 1): 116–124।

8. सोनकर, एस.डी. (2004): फीजिओकैमिकल प्रोपर्टिज ऑफ स्वॉयल्स ऑफ जबलपुर ऐज ऐफेक्टेड बाई प्लान्टेशन्स ऑफ डिफरेन्ट ट्री स्पीसिज़। नेचर, एन्वायरमेन्ट एंड पॉल्यूशन टैक्नोलॉजी, 3(1): 33–38।

बुलेटिन

1. मेशराम, पी.बी. और पात्रा, ए.के. (2003): पेस्ट्स ऑफ मेलाइना आर्बोरिया एंड दीयर कन्ट्रोल मैसर्स सी.एफ.आर.एच.आर.डी., बुले. नं. 13, 12 पी.पी.।

2. मेशराम, पी.बी. और पात्रा, ए.के. (2003): वर्मिकम्पोस्ट–प्रोडक्शन एंड यूटिलिटी। 103 आई.सी.एफ.आर.ई., बुले. नं. 9, 12, पी.पी.।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनी

श्री ए.के. पात्रा; श्री. एस.डी. सोनकर; डॉ. पी.बी. मेशराम; डॉ. डी.एल. नन्देश्वर; श्री ए. विजयराघवन और डॉ. के.सी. तिवारी ने उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर मे 26 और 27 फरवरी, 2004 को "पादप संरक्षण के लिए क्षेत्रीय रणनीति" पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।